कलीसिया अध्याय 25

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 1:1-4:30**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 1:1-4:30) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(1) उत्पत्ति 2:24**

वचन याद करने की सातवीं श्रंखला (छ) "मसीही विवाह" के बारे में हैं। पांच स्मरण वचनों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:
(1) छोड़ना और मिलना। उत्पत्ति 2:24।
(2) प्रेम और अगुवाई।
(3) प्रेम करें और अधीन हों। तीतुस 2:4-5।
(4) झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23-24।
(5) विश्वास योग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4।

दो दो करके उपरोक्त ***वचनों पर मनन करें, याद करें और उसको पुनरावलोकन करें।***
(1) छोड़ना और मिलना। उत्पत्ति 2:24। इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेगें।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* **मसीही परिवार में बच्चे का पालन पोषण करना**

परिचय। यह अध्याय हमें मसीही परिवार में बच्चे का पालन पोषण करने के बारे में बताता है। इस अध्याय में हम सीखेगें कि बाइबल बच्चों के पालन पोषण करने के क्षेत्र में माता पिता की जिम्मेदारियों के बारे में क्या कहती है। हम खास तौर पर उदाहरणों और प्रेम पर ध्यान केन्द्रित करेगें।
यशायाह 43:7 के अनुसार, *परमेश्वर ने* बच्चों *को अपनी महिमा करने के लिए बनाया* है। इसलिए भजन 127:3 में लिखा है कि बच्चे *परमेश्वर यहोवा के ही हैं।* परमेश्वर ने माता पिता के हाथों में बच्चों को *सौंपा*

है ताकि वे उसकी ओर से बच्चों की परवरिश करें। 1शमुएल 1:11,28 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से हन्ना ने अपने पुत्र को परमेश्वर की सेवा करने के लिए दे दिया। उसने परमेश्वर से सन्तान के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे सन्तान दी। लेकिन उसके बाद हन्ना ने अपने बच्चे को अपने सम्पूर्ण भर परमेश्वर की सेवा करने के लिए परमेश्वर को दे दिया। परमेश्वर ऐसे मसीहियों को चाहता है जो अपने बच्चों को प्रभु के भय में होकर पालें, लेकिन वह मसीहियों से यह मांग या अपेक्षा नहीं करता है कि वे अपने बच्चे को कलीसिया या किसी संस्थान या पूर्ण काल की सेवाकाई के लिए समर्पित कर दें। इसका निर्णय बच्चा स्वयं बढ़ा होने पर कर सकता है। परमेश्वर ज्यादातर मसीही बच्चों को समाज में प्रतिदिन अपने साधारण कामों के द्वारा परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाता है। लेकिन, परमेश्वर माता पिता से उसकी ओर से बच्चों की परवरिश बाइबल में दिये गये सिद्धान्तों व शिक्षाओं के आधार पर करने के लिए जरूर कहता है। परमेश्वर ने माता पिता को तीन महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी हैं:

वे अपने बच्चों के लिए एक आदर्श बनें

उनसे प्रेम करें

उन्हें शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान करें (देखें अध्याय 27)

क. बच्चे के लिए आदर्श बनने की ज़िम्मेदारी

1. माता पिता के दो प्रकार के उदाहरण।

खोजें व चर्चा करें। कौन से बुरे या अच्छे उदाहरण या आदर्श माता पिता अपने बच्चों के सामने रख सकते हैं?

(1) बाइबल माता पिता के बुरे उदाहरणों के प्रति हमें चेतावनी देती है।

पढ़ें 1 राजा 22:51-53; 2 इतिहास 25:2, 14-20; 2 इतिहास 26:4, 16-19।

ध्यान दें। इस्राएल के राजा अहज्याह ने वही किया जो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था, क्योंकि वह अपने दुष्ट माता पिता अहाब और इज़बेल के सिखाए रास्ते पर ही चला,जिन्होंने इस्राएल से पाप करवाया। वे दोनों मूर्तिपूजक थे और वह भी मूर्तिपूजक बन गया।

राजा अमस्याह ने भी अपने खरे मन से परमेश्वर की सेवा नहीं की। वह बहुत घमण्ड करने लगा। उसका बेटा, राजा उज्जियाह भी अपने पिता के नक्शे कदम पर चला और घमण्डी बन गया।

(2) बाइबल हमें अच्छे माता पिता के प्रभाव के उदारहण भी दिखाती है।

पढ़ें नीतिवचन 31:10-31।

ध्यान दें। नीतिवचन 31:10-31 में हम एक अच्छी मां का उदारहण देखते हैं, जिसके बच्चे और उसका पति सार्वजनिक तौर पर उसकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि वह उनके जीवन के लिए एक सुन्दर आशीष ठहरी। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि माता पिता अपने बच्चों के लिए निम्नलिखित पांच क्षेत्रों में एक आदर्श ठहरें: अर्थात आज्ञाकारिता, सच्चाई या ईमानदारी, आदर, बुद्धि और प्रेम।

(3) हालांकि मसीही माता पिता धर्मी ठहराये जा चुके हैं, लेकिन फिर भी उनसे कभी-कभी पाप हो जाता है (1 यूहन्ना 1:8-2:2)

पढ़ें मत्ती 5:23-24; नीतिवचन 3:33।

ध्यान दें। माता पिता या अभिभावक सिद्ध नहीं होते, उनसे भी गलतियां होती हैं और कई क्षेत्रों में वे अपने बच्चों पर बुरा असर डालने वाले भी ठहरते हैं(उहादरण के लिए उनके गुस्से को जाहिर करने के क्षेत्र में)।

लेकिन, उन मौकों पर अभिभावक अपने बच्चे से अपने आचरण या व्यवहार के लिए अपने बच्चे से क्षमा मांग कर उसके साथ मेल मिलाप कर सकता है। परमेश्वर बुराई करने वाले के विमुख रहता है, लेकिन वह धर्मियों के घर को आशीषित करता है(1 पतरस 3:12)।

2. परमेश्वर द्वारा माता पिता को दी गयी जिम्मेदारियों का उदाहरण।

खोजें और चर्चा करें। एक बेटी अमूमन बढ़े होकर किसके समान बनती है? बेटा बड़ा होकर किसके समान बनता है? अपने माता पिता के समान। बच्चे अपने माता पिता के दैनिक जीवन में प्रेम, अगुवाई, आदर और अधीनता को देखकर सबसे अच्छी तरह सीखते हैं।

(1) माता को परमेश्वर द्वारा दी गयी जिम्मेदारियां।

पढ़ें उत्पत्ति 3:16; तीतुस 2:4-5।

ध्यान दें। परमेश्वर द्वारा एक मां की जिम्मेदारी यह है कि वह अपने बच्चों के पिता से प्रेम करे, उसका आदर करे व उसके अधीन रहे। तीतुस 2:4 हमें बताता है कि एक जवान माँ अपने पति और बच्चे से प्रीति रखे, संयमी, पवित्रता घर का कारबार करने वाली, भली और अपने पति के अधीन रहने वाली हो ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।

यद्यपि स्त्रियां भी परमेश्वर की दृष्टि में उतनी ही मूल्यवान हैं जितने पुरूष, लेकिन परमेश्वर ने स्त्रियों को अलग कार्य सौंपे हैं:

- *शारीरिक* रूप से बच्चे जनने में
- *सामाजिक* तौर पर विवाह ओर परिवार में
- *आत्मिक* तौर पर मण्डली में भूमिका।

हालांकि संसार में परमेश्वर द्वारा दिये गये इन भिन्न कामों को अस्विकार किया जा रहा है, लेकिन मसीही महिला परमेश्वर के राज्य में इन मूल्यों को बनाये रखती है! खास तौर पर जब बच्चे जवान हो तो, उन्हें घर में मां की जरूरत होती है, जो उनसे प्रेम करने, उन्हें शिक्षा देने तथा उनकी परवरिश करने के लिए वहां है। जब भी मां के नौकरी करने का सवाल आये तो हमेशा उसे तराजू में तौल लेना चाहिए क्योंकि एक तरफ तो पत्नी की ज्यादा भौतिक वस्तुएं प्राप्त करने की इच्छा, अधिक विलासता पूर्ण और स्वाधीन या आत्मनिर्भर जीवन जीने की चाहत है तो दूसरी ओर बच्चे की भावनात्मक, सामाजिक, भौतिक और आत्मिक ज़रूरतें होती हैं।

(2) परमेश्वर द्वारा पिता को सौंपी गयी ज़िम्मेदारियां।

पढ़ें उत्पत्ति 3:17-19; इफिसियों 5:22-25; 6:4; 1 कुरिन्थियों 13:4-8।

ध्यान दें। परमेश्वर द्वारा पिता को दी गयी जिम्मेदारी यह है कि वह अपने बच्चों की मां को प्रेम करके व उसकी अगुवाई करके अपनी पत्नी को प्रेम करे। परमेश्वर ने पिता को अलग तरह के काम सौंपे हैं:

- जिस तरह से मसीह ने कलीसिया को प्रेम किया है वैसे ही वह बच्चों की मां को प्रेम करे।
- जैसे मसीह ने कलीसिया की अगुवाई की वैसे वह अपने बच्चों की अगुवाई करे।
- अपने परिवार के भोजन पानी का इन्तेजाम करने के लिए काम करे।
- कि वह अपने बच्चे की परवरिश परमेश्वर के वचनों और शिक्षाओं के आधार पर करे।

हालांकि संसार में परमेश्वर द्वारा दिये गये इन भिन्न कामों को अस्विकार किया जा रहा है, लेकिन मसीही पिता परमेश्वर के राज्य में इन मूल्यों को बनाये रखता है। खास तौर पर जब उसके बच्चे जवान हों, जिन्हें एक ऐसे पिता की आवश्यकता है जो उन पर ध्यान दे और उनके साथ दोस्त की व्यवहार करे, जो उन्हें सलाह और प्रोत्साहन प्रदान करे।

(3) इसके अलावा परिवार में, माता पिता जो बोते हैं वह काटते भी हैं।

पढ़ें गलातियों 6:7-8; यहेजकेल 16:44।

ध्यान दें। जब कोई पिता मसीह के समान प्रेम व अगुवाई करता है, तो मां के लिए उसे प्रेम करना और परिवार में उसकी अगुवाई के अधीन होना कोई मुश्किल बात नहीं होती। बच्चे भी इसे देखकर सीखेगें कि उन्हें किस तरह से प्रेम, अगुवाई, आदर करना और व्यवहारिक तौर पर अपने अधिकारियों के अधीन होना है। जब माता पिता परमेश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गयी जिम्मेदारी को ईमानदारी से पूरा करते हैं, तो बच्चे भी उन्हें देखकर सीखते हैं कि परमेश्वर के राज्य में माता पिता होने का अर्थ क्या होता है। इसके अलावा, यहेजकेल 16:44 के अनुसार, "पुत्री अपनी मां के जैसे ही होगी" और "पुत्र अपने पिता के जैसा ही होगा!"

(4) उपरोक्त कारण दर्शाते हैं कि क्यों बच्चों को एक पिता और माता की आवश्यकता होती है।

पढ़ें मलाकी 2:13-16;लूका 14:12-14; याकूब 1:27।

ध्यान दें। परमेश्वर तलाक से इस लिए सबसे ज्यादा नफरत करता है क्योंकि तलाक के कारण बच्चों की जिन्दगी पूरी तरह बर्बाद हो जाती है। परमेश्वर मसीही विवाह और मसीह परिवार को इसलिए खड़ा करता है कि वह अपने योग्य (सन्तान) उत्पन्न कर सके! ऐसे मामलों में जहां पर किसी परिवार में यदि माता या पिता में से कोई एक मर गया हो, तो मसीही भाई बहनों को उस विधवा बहन या विधुर या तलाकशुदा के परिवार का ख्याल करना चाहिए। उन्हें विधवा के परिवार को नियमित तौर पर अपने परिवार में आमन्त्रित करना चाहिए जिससे वे इन आत्मिक सिद्धान्तों की शिक्षा पा सकें।

3. माता पिता के लोगों और परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रियाओं के उदाहरण।

खोजें और चर्चा करें। किन परिस्थितियों में एक अभिभावक अपने बच्चे पर प्रभाव डाल *सकता है?*
बच्चों के लिए यह देखना बहुत महत्वपूर्ण हैं कि उनके माता पिता लोगों व परिस्थितियों के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया प्रगट करते हैं, खास तौर पर रिस दिलाने वाले लोगों और कठिन परिस्थितियों में।

(1) माता पिता के अच्छे उदाहरण का अनुसरण करना।

पढ़ें 1 थिस्लुनिकियों 1:3; 5:14; रोमियों 8:28।

ध्यान दें। मुश्किल स्वभाव वाले लोगों और कठिन परिस्थितियों का सामना करना माता पिता के लिए कठोर स्वभाव के लोगों के प्रेम ज़ाहिर करने, चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों में *विश्वास* करने तथा मुश्किल परिस्थितियों में *आशा* दिखाने का अवसर होता है। जब माता पिता निकम्मे लोगों को डांटते, डरे हुए लोगों को उत्साहित करते, कमज़ोरों की सहायता करते, और सबके साथ धीरज के साथ व्यवहार करते हैं तो उनके बच्चो को अच्छा लगता है। इस तरीके से बच्चे अपने माता पिता के पदचिन्हों पर चलना सीखते और वैसे ही कामों को करते हैं! जब बच्चे देखते हैं कि उनके माता पिता किस तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते और अपनी कठिन परिस्थितियों में भी किस तरह परमेश्वर के कामों के प्रति समर्पित रहते हैं तो, वे भी व्यस्क होने पर अपने माता पिता के अच्छे उदाहरण का अनुसरण करना पसन्द करेगें।

(2) माता पिता के बुरे उदाहरण का अनुसरण करना।

पढ़ें गलातियों 6:7-8; 1 पतरस 2:23।

ध्यान दें। लेकिन बच्चे केवल माता पिता के अच्छे कामों पर ही ध्यान या अनुसरण नहीं करते। वरन वे अपने माता पिता की बुराईयों को भी दोहराते हैं। यदि उनके माता पिता किसी की आलोचना करते, दूसरों की चुगली या न्याय करते, किसी खास समूह के बारे में नफरत फैलाते हैं(जाति या, धर्म पर टिप्पणी), किसी के द्वारा बेइज्जती करने पर प्रतिकार करते, बदला लेते है, लोगों से परेशान होकर उन्हें धमकाने लगते हैं, तो उनके बच्चे भी बड़े होने पर उनकी इन्हीं बुराईयों को दोहरायेगें।

4. माता पिता के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध का उदाहरण।

(1) मसीही परिवारों में मसीह का स्थान।

खोजें और चर्चा करें। मसीही परिवार में मसीह या परमेश्वर को क्या स्थान प्राप्त होना *चाहिए?*

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 6:5-6।

ध्यान दें। परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने के क्षेत्र में माता पिता को अपने बच्चों के लिए एक उदाहरण बनना चाहिए। उदाहरण के लिए, प्रतिदिन घर में बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना। व्यवस्थाविवरण 6:5-6 में, परमेश्वर माता पिता को आज्ञा देते हैं कि उन्हें सबसे पहले, "अपने परमेश्वर यहोवा से पने सारे मन, और अपने सारे जीव, और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना"। माता पिता को चाहिए कि वे परमेश्वर की आज्ञा को अपने हृदय पर राज्य करने दें और उसी की अगुवाई से उनका जीवन व व्यवहार प्रभावित हो। माता पिता के जीवन और मसीही परिवार में सबसे पहला स्थान परमेश्वर को मिलना चाहिए!

(2) मसीही परिवार में बच्चों व सेवाकाई का स्थान।

खोजें व चर्चा करें। मसीही परिवारों में बच्चों और सेवाकाई को कौन सा स्थान नहीं दिया जाना चाहिए?

पढ़ें मत्ती 10:37; 1 तीमुथीयुस 3:4-5।

ध्यान दें। मत्ती 10:37 में यीशु मसीह सिखाते हैं," जो कोई अपने पुत्र या पुत्री को मुझसे बढ़कर प्रेम करता है, तो वह मेरे योग्य नहीं है।" इसलिए, माता पिता को *अपनी पूरी दुनिया को अपने बच्चों तक ही सीमित रखने से बचना* चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उनके बच्चे स्वार्थी हो जाएंगे और बिगड़ जाएंगे। इसके बजाय, माता पिता ने बच्चों को परिपक्वता, जिम्मेदारियों और चरित्र में मज़बूत होने में सहायता करनी चाहिए।

इसी तरीके से, मसीही परिवारों को केवल मसीही सेवाकाई के चारों तरफ ही सीमित होकर नहीं रह जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे को ऐसा लगेगा कि उसे नज़रअन्दाज़ किया जा रहा है और वह माता पिता से किसी प्रकार की उम्मीद छोड़ देगा। इसके बजाय मसीही परिवार को केवल यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं पर ही अपना ध्यान देना चाहिए। इस तरके से विभिन्न ज़िम्मेदारियों और अभिभावकों तथा बच्चों की प्राथमिकताओं में बेहतर सन्तुलन बनाये रखना सम्भव हो पाएगा।

ख. बच्चों को प्रेम करने की माता पिता की ज़िम्मेदारी

1. 1 कुरिन्थियों 13 के सिद्धान्तों पर आधारित होकर प्रेम करें।

खोजें और चर्चा करें। व्यवहारिक तौर पर मसीही अभिभावकों को किस तरह से प्रेम करना *चाहिए?*

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:4-8।

ध्यान दें। माता पिता को अपने बच्चों से विचारों में या ज्यादा लाड़ प्याद दिखाकर प्रेम नहीं,वरन बाइबल के सिद्धान्तों पर आधारित होकर प्रेम करना चाहिए। "धीरज" वह प्रेम हैं जो इन्तज़ार कर सकता है। प्रेम बच्चे पर अपनी कृपा प्रगट करने के लिए जोर जबरजस्ती नहीं करता वरन वह अपनी कृपा प्रगट करने के लिए इन्तज़ार कर सकता है। "कृपा" एक ऐसा प्रेम है, जो मिलनसार होता है, जो हमेशा सहायता करता है और बच्चे की सहायता करने का एक भी अवसर जाने नहीं देता। बच्चे के लिए क्या अच्छा है उसका फैसला बच्चे की इच्छा या परेशानी पर निर्भर नहीं करता, वरन वह परमेश्वर के वचनों और माता पिता के अनुभवों पर निर्भर करता है। "जलन न करने वाला प्रेम" वह प्रेम हैं जो बच्चे की सराहना करता, शाबाशी देता और जो सम्मान उसे मिलना चाहिए वह उसे प्रदान करता है।"घमण्ड न करना" वह प्रेम हैं जो अपनी उपलब्धियों के बावजूद शालीन रहता है और बच्चों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करता। "नहीं फूलने वाला" प्रेम है जो बच्चे के साथ सम्बन्ध बनाते समय अपनी ताकत और बच्चे की कमज़ोरी के प्रति विनम्र बना रहता है। बच्चा अपने माता पिता के ढोंग व दोहरे मापदण्ड को जल्द ही भांप जाता है। "झुंझलाता नहीं" वह प्रेम है, जो बच्चे के प्रति अच्छे व भद्र आचरण को प्रगट करता है। "अपनी भलाई नहीं चाहता" वह प्रेम है जो निस्वार्थ भाव से अपनी नहीं वरन बच्चे का लाभ चाहता है। "बुरा नहीं मानता" वह प्रेम है, जो बच्चे की वजह से लगने वाली चोटों को चुपचाप सह लेता है।

2. एकाग्र ध्यान देने वाला प्रेम।

खोजे व चर्चा करें। व्यवहारिक तौर पर मसीही माता पिता को अपने बच्चों पर किस तरह ध्यान देना *चाहिए?*

(1) एकाग्र ध्यान देना।

पढ़ें गलातियों 6:7-8।

ध्यान दें। माता पिता को अपने बच्चों पर एकाग्र ध्यान देना चाहिए, नहीं तो, बच्चे भी बड़े होकर उनकी किसी भी बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देगें। माता पिता बच्चों की जवानी में वहीं काटते हैं जो उन्होंने उनके बचपने में बोया होता है!

(2) ध्यान से उनकी बात सुनें।

पढ़ें नीतिवचन 18:13।

ध्यान दें। जब बच्चे कोई प्रश्न करें या अपने माता पिता से कोई बात करें तो माता पिता को उनकी बातें ध्यान से सुनना चाहिए। माता पिता को बच्चों की बातों पर अन्दाज़ा नहीं लगाना चाहिए। उन्हें धीरज के साथ तब तक बच्चे की बात को सुनना चाहिए जब तक कि बच्चा अपनी बात को पूरा न कर ले। उन्हें बच्चे की बात को गम्भीरता के साथ सुनना चाहिए और उसे ग्रहण योग्य महसूस कराने में सहायता करनी चाहिए(रोमियों 15:7)। जब बच्चे को महसूस होता है कि उसके माता पिता का रवैय्या उसकी बातों के प्रति आलोचनात्मक है, या वह उनका मज़ाक बनाते हैं, तो उसे ऐसा लगता है कि उसके माता पिता न सिफ उसकी बातों को वरन उसे भी अस्वीकार कर रहे हैं। अगर कोई बच्चा अपने माता पिता की बात नहीं सुन रहा है तो इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने भी उसकी बात को कभी ध्यान से नहीं सुना।

(3) बाधामुक्त समय व्यतीत करें।

पढ़ें मरकुस 3:13-14

ध्यान दें। यीशु चाहते थे कि उसके चेले हमेशा "उसके साथ" रहें। "उनके साथ" रहना ही एकमात्र रास्ता था, जिसके द्वारा वह उन्हें प्रभावित और प्रशिक्षित कर सकता था। माता पिता को अपने बच्चों के साथ

नियमित तौर पर बाधामुक्त व समर्पित समय बिताने की योजना बनानी चाहिए। साथ मिलकर रचनात्मक काम करें, जैसे उनके साथ खेलें, उनके साथ घूने जाएं, उनके साथ गाना बजाना करें, कहानियां सुनाएं। "उनके साथ" हर वह काम करें जो उनके लिए महत्वपूर्ण हो! होने दें कि किसी भी अन्य वजह से बच्चों के साथ समय बिताने की योजना भंग न होने पाए। [2]

(4) धन और खुद को खर्च करें।

***पढ़ें* 2 कुरिन्थियों 12:14-15।**

ध्यान दें। पौलुस कहता है कि माता पिता को अपने बच्चों के लिए धन *बटोरना* चाहिए। वह कहता है कि वह अपने आत्मिक बच्चों के लिए खुशी खुशी अपना सब कुछ खर्च करने के लिए तैयार है। माता पिता को बच्चों की *महत्वपूर्ण जरूरतों* को पूरा करने के लिए अपना धन *खर्च करने* में खुशी महसूस करना चाहिए। उन्हें अपने बच्चे को घर में, स्कूल में, क्रीड़ा पाठशाला में, विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से उत्तम शिक्षा, युवा केन्द्रों द्वारा यथा सम्भव आत्मिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। उन्हें अगर अपने कुछ खर्च को काट कर या कुछ अभिलाषाओं को त्यागकर या बच्चों के शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहीं जाने पर कुछ अतिरिक्त कार्य करके भी धन अर्जित करना पड़े तो करना चाहिए। और बाद में माता पिता को अपने बच्चों पर आर्थिक बोझ डालने वाला नहीं होना चाहिए।

पौलुस यह भी कहता है कि वह *उनके प्राणों को बचाने के लिए खुद भी बहुतायात से खर्च होने के लिए* तैयार है। चाहे बच्चा अपने माता पिता को ज्यादा प्रेम न भी करे, लेकिन माता पिता को अपने बच्चे से प्रेम करना चाहिए। बच्चे को अपने आप से नहीं वरन मसीह से बांधकर रखें। क्योंकि मसीह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए वरन इसलिए कि वह खुद दूसरों की सेवा टहल करे और उनकी छुड़ौति के लिए अपने प्राणों को दे(मरकुस 10:45)। निश्चय ही, माता पिता को अपने बच्चे की वास्तविक(भावनात्मक, बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक) जरूरत को पूरा करने के लिए त्याग करने या उनको लाड़ दिखाते हुए उनकी सारी इच्छाओं को पूरा करने में अन्तर करना आना चाहिए!

3. परिपक्वता और पूर्ण सोहार्द के साथ एक दूसरे पर निर्भरता का विकास करते हुए प्रेम करें।

परिचय। कई बच्चे पूरी तरह से सारे अधिकारों और नियन्त्रण से स्वावलम्बी हो जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे विरोधी और अपराधी बन सकते हैं। जबकि दूसरे बच्चे पूरी तरह से माता पिता या दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे अपरिपक्व या जीवन भर किसी न किसी पर निर्भर रहते हैं। पूर्ण रूप से आत्म-निर्भरता या पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होना दोनों ही प्रकार के रिश्ते सिद्ध नहीं हैं।

एक तरफ बाइबल हमें शिक्षा देती हैं कि परिपक्व मसीहियों को एक दूसरे की जरूरत होती है उन्हें एक दूसरे की सेवा करनी चाहिए(1कुरिन्थियों 12:21; 1पतरस 4:10)। इसलिए बच्चों *को कुछ हद तक आपस में एक दूसरे पर निर्भर होना सीखना जरूरी है।* दूसरी तरफ बाइबल मसीहियों को किसी भी इन्सान का गुलाम बनने के लिए मना करती है(यिर्मयाह 17:5-8; गलातियों 1:10)। इसलिए बच्चों *को दूसरों के साथ आपसी सम्बन्धों को कायम रखने के दौरान कुछ हद तक आत्म निर्भरता को सीखना भी जरूरी होता है।*

खोजें और चर्चा करें। बच्चों में परिपक्वता और स्वस्थ परस्पर निर्भरता में माता पिता द्वारा उनके बच्चों की मदद करने के लिए बाइबल क्या कहती है?

(1) बच्चों को करने के लिए कोई कार्यभार सौंपे जिसमें कोई लक्ष्य या कोई जिम्मेदारी हो।

पढ़ें विलापगीत 3:27।

ध्यान दें। माता पिता अपने बच्चों को कोई जिम्मेदारी सौंपने के द्वारा अपने बच्चों को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। विलापगीत 3:27 हमें सिखाता है,"पुरुष के लिए जवानी में जूआ उठाना भला है"। जब बच्चों को पास हद से ज्यादा खाली समय होता है तो, वे नीरस महसूस करने लगते हैं और जिसके चलते अपने आपको बेकार के कामों में, असमाजिक व्यवहारों और यहां तक कि अपराधों में फंसा लेते हैं। लेकिन जब बच्चों को अच्छे कामों और जिम्मदारियों में व्यस्त रखा जाता है, तो वे आगे चलकर एक परिपक्व और जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। जिन कामों और जिम्मेदारियों को आज वे घर के सुरक्षित माहौल में करना सीखते हैं वे ही उन्हें बाद में समाज के असुरक्षित माहौल में काम करना और जिम्मेदारियां निभाना सिखाएंगे!

(2) बच्चों को सन्तुष्ट और धन्यवादी होना सिखाए।

पढ़ें फिलिप्पियों 4:11-12; 1 तीमुथीयुस 6:6-10।

ध्यान दें। माता पिता अपने बच्चों को सन्तुष्ट और धन्यवादी होना सिखाकर अपने बच्चों को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। अगर माता पिता अपने बच्चों को सच में प्रेम करते हैं तो वह अपने बच्चों वे सारी चीज़ें उपलब्ध नहीं करा देते जिसके वह लायक है। बच्चे की हर इच्छा या अभिलाषा को पूरा करने से बच्चा पूरी तरह बिगड़ जाएगा। लेकिन अगर वह उन हालातों में सन्तुष्ट होना सीख जाएगा जिसमें उसको वह नहीं प्राप्त कर पाता जिसकी वह चाह कर रहा था तो वह थोड़ा बहुत रचनात्मक होने का प्रयास करता और उसे हासिल करने के लिए कुछ काम करता है, उदाहरण के लिए, वह कोई पार्ट-टाइम जौब देखता है, किसी अतिरिक्त पाठयक्रम की पढ़ाई करता है या फिर वह किसी सामूदायिक केन्द्र में काम करता है।

(3) अति-सुरक्षात्मक रवैय्या न अपनाएं।

पढ़ें यशायाह 43:2।

ध्यान दें। माता पिता अति सुरक्षात्मक रवैय्या न अपनाकर अपने बच्चो को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। बच्चों को उस संसार में रहना और काम करना सीखना है जिसमें खतरे, परीक्षाएं, गतिरोध, और निराशाएं होती है। यशायाह 43:2, परमेश्वर ने अपने बच्चों से वायदा किया है कि, "जब तू पानी में होकर चले तो मैं तेरे साथ हूँ, जब तू नदियों में से होकर चले तब वे तुझे न डुबा सकेंगी(लाल समुद्र के बारे में विचार करें); जब तू आग में होकर चले, तब तुझे आँच न लगेगी और उसकी लौ तुझे जला न सकेगी(दानिय्येल के मित्रों के आग में डाले जाने के बारे में सोचें)!

अगर माता पिता बच्चे को हर प्रकार के खतरे और बुराई से बचाने का प्रयास करेगें, तो बच्चा अपने जीवन में कभी भी खतरों का सामना करना और बुराई का विरोध करना नहीं सीखेगा। इसके अलावा वह गम्भीर समस्याओं या मुश्किल परीक्षों के पड़ने पर सहायता के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना भी नहीं सीखेगा।

निश्चय तौर पर, माता पिता को जरूरत पड़ने पर अपने बच्चे की सहायता करनी चाहिए। लेकिन उन्हें साथ ही साथ बच्चों को अपनी समस्या, परीक्षा और खतरों को सामना करने का अवसर भी प्रदान करना चाहिए। केवल इसी तरह से बच्चे समझ और बुद्धि को प्राप्त करते, अच्छे चुनाव करना या निर्णय लेना और बाइबल में लिखी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना सीखते हैं। बच्चों के साथ खड़े हों, संसार में होने वाली समस्याओं और उनके परिणामों के बारे में उनके साथ चर्चा करें, जब वे गिरें तो उन्हें दोबारा उठने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अच्छी सलाह दें और उनके लिए प्रार्थना करें, ताकि बच्चे परमेशानियों के कारण विचलित न हो जाएं। लेकिन बच्चों से इन समस्याओं और अवसरों के द्वारा सीखने का अवसर न छीनें।

(4) ज़िद्दी (मांग करनेवाले) न बने।

पढ़ें भजन 127:3।

ध्यान दें। माता पिता ज़िददी रवैय्या न अपना कर अपने बच्चों को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। बच्चों को पता हो कि उनकी नहीं वरन परमेश्वर की सम्पत्ति हैं! उनके माता पिता उनके "स्वामी" नहीं वरन प्रभु यीशु मसीह हैं! बच्चे तो परमेश्वर की तरफ से कुछ समय के लिए उनका पालन पोषण करने के लिए *दिये* गये हैं। एक मां का "नियन्त्रित करने वाला प्रेम" तब जाहिर होता है जब वह अपने बच्चे के हर एक विचार और प्रतिक्रिया को जानना चाहती है, या वह जब बच्चे की प्रतिक्रिया को बदलने का प्रयास करती है; या बच्चे को अपने आप पर निर्भर बनाने के द्वारा वह उसे भावनात्मक तौर पर अपने कब्जे में करना चाहती है। एक पिता का "नियंत्रण करने वाला प्रेम" तब प्रगट होता है जब वह बच्चे के बदले सारे निर्णय स्वयं करने का प्रयास करने लगता है। यदि माता पिता अपने बच्चों को प्रेम के नाम पर उन्हें अपने अधिकार में रखना चाहते हैं तो बच्चा भी आगे चलकर अधिकार जताने वाला बनेगा। वे आत्म केन्द्रित, स्वार्थी, लालची, कंजूस,गोपनशील और अक्खड़ बन जाएंगे। इसके बजाय माता पिता को अपने मन में ठानना चाहिए कि वे अपने बच्चों को अपना इनकार करना, चीज़ों को साझा करना और सेवा करने जैसी महत्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में बताएंगे।

सारांश। माता पिता की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों की परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करें। लेकिन बच्चों पर उनके दोस्तों, उनके अध्यापकों, खेल के प्रशिक्षक, मास मीडिया,उनके स्मार्ट मोबाइल फोन, इलैक्ट्रोनिक्स गेम्स, टेलीविजन और उनकी किताबों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए यदि माता पिता को इस बात का पूर्ण भरोसा हो कि उन्होंने अच्छी तरह से अपने बच्चों को पालन पोषण किया है, लेकिन फिर भी उनके बच्चे परिपक्व या जिम्मेदार नागरिक नहीं निकलते, तो माता पिता को अपने आपको दोष नहीं देना चाहिए।

अन्त में हर एक बच्चा जो कुछ बनता और जो कुछ वह करता है उसका स्वयं जिम्मेदार होता है! सभोपदेशक 11:9;12:1,13-14 में लिखा है, "हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द कर, और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह; अपनी मन मानी कर। और अपनी आंखो की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा.....अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहें कि मेरा मन इन में नहीं लगता।"....सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान, और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।"

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना " पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। इस बात का ध्यान दें कि आप बच्चे का पालन पोषण करते समय आप बाइबल के सिद्धान्तों को उसके जीवन के आधार के रूप में इस्तेमाल करें।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। लूका 4:31-7:50** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(2) प्रेम व अगुवाई करें, इफिसियों 5:23,25** । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 11** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।